मानवमात्र की सेवा में समर्पित था बाबा का समूचा जीवन

जग में वे ही लोग महान और अनुकरणीय हैं जिनका जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता की सेवा में समर्पित हो। अपने लिए तो सब जीते हैं, परन्तु जो दूसरों के लिए सोचता है वही महापुरुष होता है। जब जगत में मानवता कराह रही थी, मानवीय संवेदनायें शून्य होने लगी थी, तब अज्ञानता के बढ़ते तम को दूर करने के लिए एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता महसूस होने लगी थी जो मानवीय एकता, करुणा और एक मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में सहायक हो सके। ऐसे महत्व की घड़ी में एक नये युग का सूत्रपात करने अर्थ एक महान विभूति का जन्म हुआ और आध्यात्मिक क्रान्ति की नींव पड़ी।

इस महानायक का जन्म सन् 1876 में सिन्ध प्रान्त में एक सभ्य और कुलीन परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम लेखराज था। परन्तु ये बचपन से ही इतने धर्म परायण थे कि इनका व्यक्तित्व कुशल एवं प्रभावी होने के कारण हर वर्ग और उम्र के लोग इन्हें प्यार से दादा कहते थे। इन्हें किसी भी मनुष्यात्मा की पीड़ा खुद की पीड़ा महसूस होती थी। बाल्यकाल में ही इनके माता की मृत्यु हो गयी। दादा लेखराज प्रतिदिन सर्व मनुष्यात्माओं को दु:ख की पीड़ा से मुक्ति के लिए परमात्मा से अराधना करते थे। दादा लेखराज ने हीरे -जवाहरात का व्यापार शुरू किया और देखते ही देखते वे इस व्यापार में विश्व प्रसिद्ध हो गये। उनके मधुर और सौम्य व्यवहार ने बड़े-बड़े माननीय व्यक्तियों तथा राजाओं-महाराजाओं के दिल में पैठ बना दी। कई बार तो राजा उन्हें राज्य पद के लायक की संज्ञा देते थे। दादा के मन में सर्व सुखों वाली दुनियां की खोज निरन्तर रहती थी जिसमें कि दु:ख-दरिद्रता का नामोनिशान न हो। इसके लिए दादा ने अपने जीवन काल में बारह गुरु किये थे। फिर भी उन्हें सच्चे परमात्म पथ का राही कोई नहीं बना सका।

साठ साल की आयु में दादा लेखराज के जीवन में एक महान परिवर्तन आया। एक दिन जब वे वाराणसी में अपने मित्र के यहाँ आये थे तब उन्हें इस कलियुगी और पतित दुनिया के महाविनाश और नयी दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार हुआ। उस दौरान उनके तन में ईश्वरीय शक्ति की उपस्थिति थी। उस ईश्वरीय शक्ति ने दादा के अतीत और आदि काल के संस्मरण सुनाये तथा कहा कि अब इस दुनिया को नयी दुनियां बनाने का महान कार्य तुम्हें करना है। दादा को यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी और वे इस करामात को अपने गुरुओं की करामात समझ उनसे इनके बारे में पूछने गये। सभी गुरू समझ गये थे कि यह तो ईश्वरीय सत्ता का ही कार्य है। ईश्वरीय सत्ता ने उनके इस प्रश्न की उलझनों को समाप्त कर दिया और अपना परिचय सर्व आत्माओं के पिता कल्याणकारी परमात्मा शिव के रूप में दिया।

इस महान कार्य के लिए परमात्मा ने उन्हें उनका नाम दादा लेखराज से प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से नामकरण किया। और माताओं बहनों को ईश्वरीय शक्ति के रूप में आगे करने का आदेश दिया। इस आज्ञानुसार दादा लेखराज ने माताओं-बहनों के कोमल स्वभाव को जान उन्हें ईश्वरीय शक्ति के रूप में प्रत्यक्ष करने के लिए उन्हें समाज में फुसलाने वाले वैभवों से दूर रहकर सभी भौतिक विद्याओं से परे राजयोग की शिक्षा के माध्यम से परमात्म शक्ति को अपनाकर अपने अन्दर छिपी शक्तियों को प्रत्यक्ष करने को कहा। सभी धर्म और अध्यात्मिक लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए दादा लेखराज ने उन्हें धर्म, अध्यात्म और सत्य तपस्या से अवगत कराकर उन्हें समाज में पैर जमा चुकी आसुरी शक्तियों से निकाल दैवी शक्तियों के लिए प्रेरित किया। यही से स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के एक छोटे से कारवां का शुभारम्भ हुआ। राजयोग को धार्मिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक विधि में परिभाषित कर दादा ने सर्व मनुष्यात्माओं के

लिए सहज उपलब्ध करायी।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा आज साकार में नहीं है, परन्तु उनकी सूक्ष्म दृष्टि और शक्ति आज भी लाखों आत्माओं को दैवी गुणों से सजाने का महान कार्य कर रही है। दादा लेखराज ने हीरे जवाहरात के व्यापार को छोड़ मनुष्यों के अन्दर छिपे हीरे तुल्य गुणों को परखने तथा उन्हें पुनर्स्थापित करने के लिए अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पण कर दिया। इस संस्था की स्थापना हैदराबाद सिन्ध (जो अभी पाकिस्तान मे है) में ओम मण्डली के रूप में स्थापित हुई। दादा लेखराज को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अनेक लान्छन और आरोप लगाये गये परन्तु विजय सत्य की हुई। महात्मा गांधी का कथन है - कि पाप से डरो पापी से नहीं। इसका सत्यापन करते हुए दादा लेखराज ने अपकार करने वालों पर भी उपकार किया। अन्तोगत्वा वे भी इस कारवां में शामिल हो गये।

भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद ईश्वरीय शक्ति के आदेशानुसार ब्रह्मा बाबा ने ऋषि मुनियों की तपोभूमि तथा नक्काशी में दुनिया भर में मशहूर दिलवाड़ा मन्दिर और नक्की झील के समीप तपस्या के लिए चयन किया जिसका नाम पाण्डव भवन रखा और यही से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना हुई। बाबा ने सर्व मनुष्य आत्माओं की सेवा में अपना जीवन लगाया। उन्होंने एक कुशल रूहानी डाक्टर बन कब्रदाखिल आत्माओं का नवसृजन कर दैवी गुणों से भरपूर करने का कार्य किया। धीरे-धीरे ये कारवां बढ़ता गया। बाबा का उद्देश्य एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना था जहाँ दु:ख और दरिद्रता का नामोनिशान न हो। इसके लिए वे प्रकृति और पर्यावरण का ध्यान रख सतोप्रधान बनाने का प्रयास करते रहे। श्वेत वस्त्रों के बीच सजी बाल ब्रह्मचारिणी बहनों को उन्होंने इस संस्था में आगे रख भारत माता और वन्देमातरम बन भारत और विश्व का उद्धार करने का अनुगामी बनाया और बाबा स्वयं एक निमित्त बन ईश्वरीय सेवा में लगे रहे और पूरे विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस ईश्वरीय कार्य में सर्व मनुष्यात्माओं की सेवा करते हुए बाबा ने तपस्या की ज्वाला से अपने आपको सोलह कला सम्पूर्ण और निर्विकारी बनाया और 18 जनवरी, 1969 को अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। परन्तु बाबा द्वारा जो आध्यात्मिक शक्ति का बीज बोया गया वो आज विशाल रूप ले लिया है। बाबा आज भी सूक्ष्म वतन से ईश्वरीय शक्ति से इस आध्यात्मिक क्रान्ति में सम्मिलित लोगों को सजा रहे है। आज पूरे विश्व के 130 देशों में यह संस्था वट वृक्ष का रूप ले चुकी है और लाखों लोग अपने जीवन को दैवी गुणों से सजाकर हीरे तुल्य बना रहे है।

इस वर्ष हम सभी ब्रह्मा बाबा की 39 वीं पुण्यतिथि मना रहे हैं। इस महान दिवस को संस्था ने विश्व योग शान्ति दिवस के रूप में घोषित किया है। आज के दिन संस्था से जुड़े लाखों लोग इस दिन ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति दर्ज कराने तथा पूरे विश्व से अत्याचार, भ्रष्टाचार मिटाकर एक शान्तिमय दुनिया बनाने के लिए सामूहिक विश्व शान्ति का दान देते है। आप भी इस महान कार्य में सहयोगी बनिये।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com